॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

'हिन्दू (सनातन), बौद्ध, ईसाई और मुस्लिम-ये चार धर्म वर्तमान समयमें संसारमें मुख्य माने जाते हैं । इन चारोंमेंसे एक-एक धर्मको माननेवालोंकी संख्या करोड़ोंमें है। इनमें बौद्ध, ईसाई और मुस्लिम-धर्मको चलानेवाले क्रमशः बुद्ध, ईसा और मोहम्मद माने जाते हैं । ये तीनों ही धर्म अर्वाचीन हैं । परन्तु हिन्दूधर्म किसी मनुष्यके द्वारा चलाया हुआ नहीं है अर्थात् यह किसी मानवीय बुद्धिकी उपज नहीं है। यह तो विभिन्न ऋषियोंद्वारा किया गया अन्वेषण है, खोज उसीकी होती है, जो पहलेसे ही मौजूद हो। हिन्दूधर्म अनादि, अनन्त एवं शाश्वत है। जैसे भगवान् शाश्वत (सनातन) हैं, ऐसे ही हिन्दूधर्म भी शाश्वत है। इसीलिये भगवान्ने (गीता १४/२७ में) सनातन हिन्दूधर्मको अपना स्वरूप बताया है।'

'जब-जब हिन्दूधर्मका ह्रास होता है, तब-तब भगवान् अवतार लेकर इसकी संस्थापना करते हैं (गीता ४/७-८) । तात्पर्य है कि भगवान् भी इसकी संस्थापना, रक्षा करनेके लिये ही अवतार लेते है, इसको बनानेके लिये, उत्पन्न करनेके लिये नहीं। वास्तवमें अन्य सभी धर्म तथा मत-मतान्तर भी इसी सनातन धर्मसे उत्पन्न हुए हैं। इसलिये उन धर्मोंमें मनुष्योंके कल्याणके लिये जो साधन बताये गये हैं, उनको भी हिन्दूधर्मकी ही देन मानना चाहिये। अतः उन धर्मोंमें बताये गये अनुष्ठानोंका भी निष्कामभावसे कर्तव्य समझकर पालन किया जाय तो कल्याण होनेमें सन्देह नहीं मानना चाहिये।'

'प्राणिमात्रके कल्याणके लिये जितना गहरा विचार हिन्दूधर्ममें किया गया है, उतना दूसरे धर्मोंमें नही मिलता। हिन्दूधर्मके सभी सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक और कल्याण करनेवाले हैं।'

-ब्रह्मलीन परमश्रद्धेय स्वामाजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

गीता प्रकाशन, गोरखपुरका अमूल्य साहित्य
गीता सत्संग मण्डल, कसौधन पंचायत मन्दिर, हरिबंश गली, शेषपुर,
गोरखपुर-273005 सम्पर्क सूत्र : 9389593845, 7668312429

क्या करें, क्या न करें ?

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

क्या करें, क्या न करें ?

(आचार-संहिता)

राजेन्द्र कुमार धवन

।। ॐ श्रीपरमात्मने नमः ।।

क्या करें, क्या न करें ?

(आचार संहिता)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।।

लेखक

राजेन्द्र कुमार धवन

प्रकाशक-
गीता प्रकाशन
गीता सत्संग मण्डल
पो०-गीताप्रेस, गोरखपुर-273005 (उ०प्र०)
सम्पर्क सूत्र-09389593845, 07668312429
E-mail : please contact us radhagovind10@gmail.com,
pbramhachari@gmail.com
Visit us it : www.gitaprakashan.org
प्रकाशित : अब तक लगभग ५,२५००० प्रतियाँ
प्रथम संस्करण : सं० २०६८, ३००० प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण : सं० २०६९, १५०० प्रतियाँ
मुल्य ३०.०० (मात्र तीस रुपये)

पुस्तक प्राप्ति स्थान

1- **गीता प्रकाशन**
गीता सत्संग मण्डल
कसौधन पंचायती मंदिर (हरिवंश गली)
पोस्ट-गीताप्रेस, गोरखपुर-273005
मो०-9389593845

2- **श्रीराम सेवा आश्रम**
केशव नगर, छटीकरा रोड
श्री वृन्दावन (मथुरा)
मो०-09410616466

3- **श्रीहरि पुस्तक प्रचार सदन**
42, विवेकानन्द रोड, गिरीश पार्क के पास,
कोलकाता-700006
मो०-09830666729

4- **राधारानी पुस्तक केन्द्र**
695, माया बाजार, पश्चिम फाटक
गोरखपुर-273001
मो०- 9198092029,07668312429

5- **गोरखपुर धार्मिक पुस्तक सदन**
B/8, गिन्नी-अपार्टमेण्ट, भादरमल रूइया मार्ग,
निकट-रेलवे क्रासिंग, मलाड (ईस्ट)
मो०-09833753470
☎: 022-28784465

6- **कैप्टन रिटायर्ड श्रीभगवान सिंह जोधा**
असल दुर्ग, 203 गिरनार कालोनी
गाँधीपथ, वैशालीनगर, जयपुर-302021
मो०-09928849500
E-mail : asaldurg1@gmail.com

7- **सत्संग समिति**
शाप नं० 41, सी.एल. शर्मा काम्प्लेक्स
फ्लाट नं० 130, सेक्टर-8,
नियर-आसलो सिनेमा,
गाँधीधाम (कच्छ)-370201
मो०-09824426477

8- **सहज गीता पाठ समिति**
हिसार (हरियाणा)
अपने यहाँ पाठ करने के इच्छुक कृपया सम्पर्क करें।
मो०- 9896934491, 7206084814, 9245625079

9- **खण्डेलवाल एण्ड सन्स**
अठखम्भा बाजार, वृन्दावन (मथुरा)
मो.: 9997977551

मुद्रक-
कमल आफसेट प्रिन्टर्स
दुर्गाबाड़ी रोड, गोरखपुर (उ०प्र०)
मो०-9415331861

॥ श्रीहरिः ॥

प्राक्कथन

हिन्दू-संस्कृति अत्यन्त विलक्षण है। इसके सभी सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक और मानवमात्रकी लौकिक तथा पारलौकिक उन्नति करनेवाले हैं। मनुष्यमात्रका सुगमतासे एवं शीघ्रतासे कल्याण कैसे हो—इसका जितना गम्भीर विचार हिन्दू-संस्कृतिमें किया गया है, उतना अन्यत्र उपलब्ध नहीं होता। जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त मनुष्य जिन-जिन वस्तुओं एवं व्यक्तियोंके सम्पर्कमें आता है और जो-जो क्रियाएँ करता है, उन सबको हमारे क्रान्तदर्शी ऋषि-मुनियोंने बड़े वैज्ञानिक ढंगसे सुनियोजित, मर्यादित एवं सुसंस्कृत किया है और उन सबका पर्यवसान परमश्रेयकी प्राप्तिमें किया है। इसलिये भगवान्ने गीतामें बड़े स्पष्ट शब्दोंमें कहा है—

> **यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।**
> **न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥**
> **तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।**
> **ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि॥**
> (गीता १६। २३-२४)

'जो मनुष्य शास्त्रविधिको छोड़कर अपनी इच्छासे मनमाना आचरण करता है, वह न सिद्धि (अन्तःकरणकी शुद्धि)-को, न सुख (शान्ति)-को और न परमगतिको ही प्राप्त होता है। अतः तेरे लिये कर्तव्य-अकर्तव्यकी व्यवस्थामें शास्त्र ही प्रमाण है—ऐसा जानकर तू इस लोकमें शास्त्रविधिसे नियत कर्तव्य-कर्म करनेयोग्य है अर्थात् तुझे शास्त्रविधिके अनुसार कर्तव्य-कर्म करने चाहिये।'

तात्पर्य है कि हम '**क्या करें, क्या न करें?**'—इसकी व्यवस्थामें शास्त्रको ही प्रमाण मानना चाहिये। जो शास्त्रके अनुसार आचरण करते हैं, वे '**नर**' होते हैं और जो मनके अनुसार (मनमाना) आचरण करते हैं, वे '**वानर**' होते हैं—

मतयो यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति वानराः।
शास्त्राणि यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति ते नराः॥

गीतामें भगवान्ने ऐसे मनमाना आचरण करनेवाले मनुष्योंको '**असुर**' कहा है—

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
(गीता १६। ७)

वर्तमान समयमें उचित शिक्षा, संग, वातावरण आदिका अभाव होनेसे समाजमें उच्छृंखलता बहुत बढ़ चुकी है। शास्त्रके अनुसार क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये—इसे नयी पीढ़ीके लोग जानते भी नहीं और जानना चाहते भी नहीं। जो शास्त्रीय आचार-व्यवहार जानते हैं, वे बताना चाहें तो उनकी बात न मानकर उनकी हँसी उड़ाते हैं। लोगोंकी अवहेलनाके कारण हमारे अनेक धर्मग्रन्थ लुप्त होते जा रहे हैं। जो ग्रन्थ उपलब्ध हैं, उनको पढ़नेवाले भी बहुत कम हैं। पढ़नेकी रुचि भी नहीं है और पढ़नेका समय भी नहीं है! शास्त्रोंको जाननेवाले, बतानेवाले और तदनुसार आचरण करनेवाले सत्पुरुष दुर्लभ-से हो गये हैं। ऐसी परिस्थितिमें यह आवश्यक समझा गया कि एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित की जाय, जिससे जिज्ञासुजनोंको शास्त्रोंमें आयी आचार-व्यवहार-सम्बन्धी आवश्यक बातोंकी जानकारी प्राप्त हो सके। इसी दिशामें यह प्रयत्न किया गया है।

शास्त्र अथाह समुद्रकी भाँति हैं। जो शास्त्र उपलब्ध हुए, उनका अवलोकन करके अपनी सीमित सामर्थ्य, समझ, योग्यता और समयके अनुसार प्रस्तुत पुस्तककी रचना की गयी है। जिन बातोंकी जानकारी लोगोंको बहुत कम है, उन बातोंको मुख्यतासे प्रकाशमें लानेकी चेष्टा की गयी है। यद्यपि पाठकोंको कुछ बातें वर्तमान समयमें अव्यावहारिक प्रतीत हो सकती हैं, तथापि अमुक विषयमें शास्त्र क्या कहता है—इसकी जानकारी तो उन्हें हो ही जायगी!

प्रस्तुत पुस्तककी रचनामें हमारे परमश्रद्धास्पद स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजकी सत्प्रेरणा रही है और उन्हींकी कृपाशक्तिसे यह कार्य सम्पन्न हो सका है। पाठकोंसे प्रार्थना है कि वे इस पुस्तकका अध्ययन करें और इसमें आयी बातोंको अपने जीवनमें उतारनेकी चेष्टा करें।

गीता-जयन्ती
विक्रम संवत् २०५८

—विनीत
राजेन्द्र कुमार धवन

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

क्रम विषय पृष्ठ-संख्या
१. सदाचार-प्रशंसा १
२. समयानुसार कर्तव्याकर्तव्य .. ५
३. शयन १०
४. मल-मूत्रका त्याग १५
५. शौचाचार (शुद्धि) २१
६. दन्तधावन २४
७. तैलाभ्यङ्ग ३०
८. स्नान ३२
९. वस्त्र ३८
१०. भोजन ४१
११. अन्न ५७
१२. जल ६७
१३. दूध ६९
१४. भक्ष्य-अभक्ष्य ७१
१५. न करनेयोग्य शारीरिक
चेष्टाएँ ७८
१६. स्पर्शास्पर्श ८३
१७. शुद्धि-अशुद्धि ८८
१८. सूतक (जननाशौच-मरणाशौच) ९७
१९. शुभाशुभ धूलि १०१
२०. पशुपालन १०२
२१. धन १०४
२२. दान १०५
२३. तीर्थ १०९
२४. उपवास १११
२५. प्रणाम ११३
क्रम विषय पृष्ठ-संख्या
२६. दूसरेकी वस्तु ११६
२७. किनको न देखें ? ११९
२८. कहाँ न बैठें ? १२४
२९. किनको न लाँघें ? १२६
३०. किनका अपमान न करें ? १२९
३१. किनपर विश्वास न करें ? १३१
३२. कहाँ निवास न करें ? १३३
३३. लक्ष्मी कहाँ नहीं आती ? १३५
३४. आत्महत्याका पाप १३८
३५. गर्भपातका पाप १४१
३६. घरसे बाहर जाते समय.... १४४
३७. मार्ग-गमन १४५
३८. विवाह १५०
३९. स्त्रियोंके लिये उपयोगी १५७
४०. गृहस्थोंके लिये उपयोगी १६३
४१. संन्यासियोंके लिये उपयोगी १७४
४२. गुरु-शिष्यके लिये उपयोगी १७८
४३. भूमिके प्रति व्यवहार १८२
४४. जल या नदीके प्रति व्यवहार १८४
४५. अग्निके प्रति व्यवहार १८६
४६. बड़ोंके प्रति व्यवहार .. १८९
४७. मित्रोंके प्रति व्यवहार ... १९२
४८. देवकार्य (देवपूजा) ... १९४
४९. पितृकार्य (श्राद्ध-तर्पण) २०४
५०. प्रकीर्ण २२३
आधार-ग्रन्थ-सूची २४९

* * *

॥ श्रीहरिः ॥

सदाचार-प्रशंसा

आचारहीनं न पुनन्ति वेदा
यद्यप्यधीताः सह षड्भिरङ्गैः।
छन्दांस्येनं मृत्युकाले त्यजन्ति
नीडं शकुन्ता इव जातपक्षाः॥

(वसिष्ठस्मृति ६।३; देवीभागवत ११।२।१)

'शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, व्याकरण और ज्योतिष—इन छः अंगोंसहित अध्ययन किये हुए वेद भी आचारहीन मनुष्यको पवित्र नहीं करते। मृत्युकालमें आचारहीन मनुष्यको वेद वैसे ही छोड़ देते हैं, जैसे पंख उगनेपर पक्षी अपने घोंसलेको।'

आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सिताः प्रजाः।
आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम्॥

(मनुस्मृति ४।१५६)

'मनुष्य आचारसे आयुको प्राप्त करता है, आचारसे अभिलषित सन्तानको प्राप्त करता है, आचारसे अक्षय धनको प्राप्त करता है और आचारसे अनिष्ट लक्षणको नष्ट कर देता है।'

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः।
दुःखभागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च॥

(मनुस्मृति ४।१५७; वसिष्ठस्मृति ६।६)

'दुराचारी पुरुष संसारमें निन्दित, सर्वदा दुःखभागी, रोगी और अल्पायु होता है।'

आचारः फलते धर्ममाचारः फलते धनम्।*
आचाराच्छ्रियमाप्नोति आचारो हन्त्यलक्षणम्॥

(महाभारत, उद्योग० ११३।१५)

---

* आचारात्फलते धर्ममाचारात्फलते धनम्। (वसिष्ठस्मृति ६।७)

‘आचार ही धर्मको सफल बनाता है, आचार ही धनरूपी फल देता है, आचारसे मनुष्यको सम्पत्ति प्राप्त होती है और आचार ही अशुभ लक्षणोंका नाश कर देता है।’

कुलानि समुपेतानि गोभिः पुरुषतोऽर्थतः।
कुलसंख्यां न गच्छन्ति यानि हीनानि वृत्ततः॥
वृत्ततस्त्वविहीनानि कुलान्यल्पधनान्यपि।
कुलसंख्यां च गच्छन्ति कर्षन्ति च महद् यशः॥

(महाभारत, उद्योग० ३६। २८-२९)

‘गौओं, मनुष्यों और धनसे सम्पन्न होकर भी जो कुल सदाचारसे हीन हैं, वे अच्छे कुलोंकी गणनामें नहीं आ सकते। परन्तु थोड़े धनवाले कुल भी यदि सदाचारसे सम्पन्न हैं तो वे अच्छे कुलोंकी गणनामें आ जाते हैं और महान् यश प्राप्त करते हैं।’

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः॥

(महाभारत, उद्योग० ३६। ३०)

‘सदाचारकी रक्षा यत्नपूर्वक करनी चाहिये। धन तो आता और जाता रहता है। धन क्षीण हो जानेपर भी सदाचारी मनुष्य क्षीण नहीं माना जाता; किन्तु जो सदाचारसे भ्रष्ट हो गया, उसे तो नष्ट ही समझना चाहिये।’

न कुलं वृत्तहीनस्य प्रमाणमिति मे मतिः।
अन्तेष्वपि हि जातानां वृत्तमेव विशिष्यते॥

(महाभारत, उद्योग० ३४। ४१)

‘मेरा ऐसा विचार है कि सदाचारसे हीन मनुष्यका केवल ऊँचा कुल मान्य नहीं हो सकता; क्योंकि नीच कुलमें उत्पन्न मनुष्योंका भी सदाचार श्रेष्ठ माना जाता है।’

आचारप्रभवो धर्मः धर्मस्य प्रभुरच्युतः।
आश्रमाचारयुक्तेन पूजितः सर्वदा हरिः॥

(नारदपुराण, पूर्व० ४। २२)

‘आचारसे धर्म प्रकट होता है और धर्मके स्वामी भगवान् विष्णु हैं। अतः जो अपने आश्रमके आचारमें संलग्न है, उसके द्वारा भगवान् श्रीहरि सर्वदा पूजित होते हैं।’

सदाचारवता पुंसा जितौ लोकावुभावपि॥
साधवः क्षीणदोषास्तु सच्छब्दः साधुवाचकः।
तेषामाचरणं यत्तु सदाचारस्स उच्यते॥

(विष्णुपुराण ३। ११। २-३)

‘सदाचारी मनुष्य इहलोक और परलोक दोनोंको ही जीत लेता है। ‘सत्’ शब्दका अर्थ साधु है और साधु वही है, जो दोषरहित हो। उस साधु पुरुषका जो आचरण होता है, उसीको सदाचार कहते हैं।’

आचारहीनः पुरुषो लोके भवति निन्दितः।
परत्र च सुखी न स्यात्तस्मादाचारवान् भवेत्॥

(शिवपुराण, वा० उ० १४। ५६)

‘आचारहीन मनुष्य संसारमें निन्दित होता है और परलोकमें भी सुख नहीं पाता। इसलिये सबको आचारवान् होना चाहिये।’

सर्वोऽयं ब्राह्मणो लोके वृत्तेन तु विधीयते।
वृत्ते स्थितस्तु शूद्रोऽपि ब्राह्मणत्वं नियच्छति॥

(महाभारत, अनु० १४३। ५१)

‘लोकमें यह सारा ब्राह्मण-समुदाय सदाचारसे ही अपने पदपर बना